# क्रियायोग अनुसन्धान संस्थान

**संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति**
**संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्**


मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo.ca

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org


वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है

क्रम संख्या.....

दिनाँक.....

## प्रकाशनार्थ

### 3 फरवरी, 2013 महाकुंभ क्षेत्र में मोरी रोड पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम

# ''क्रियायोग ध्यान अन्तःकरण में समुद्र मंथन और प्रयाग दर्शन की क्रिया''

3 फरवरी 2013 इलाहाबाद । क्रियायोग का अभ्यास प्राचीन काल में वर्णित सागर मंथन की क्रिया है । शास्त्रों में सागर मंथन का जिक्र है । देवता और राक्षस मिलकर सागर मंथन किये थे जिसमें अमृत और विष निकला था । विष को भगवान शिव ने पी लिया जिससे उनका सौन्दर्य निखर गया और अमृत सभी देवताओं के लिए छोड दिया गया । समुद्र मंथन की क्रिया आज भी अपने स्वरूप में घटित हो रही है । अपने स्वरूप में विद्यमान देवताओं और राक्षसों के द्वारा समुद्र मंथन का अभ्यास ही क्रियायोग साधना है ।'' उक्त विचार अन्तर्राष्ट्रीय सन्त स्वामी श्री योगी सत्यम् जी मोरी रोड पर सेवारत क्रियायोग शिविर में व्यक्त किया ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे स्पष्ट किया कि मनुष्य का दृश्य रूप तथा अदृश्य रूप संयुक्त रूप से अनन्त है जिसे समुद्र कहा गया है । स्वरूप में एकाग्रता केन्द्रित करके इन्द्रिय, मन, बुद्धि की क्रियाशीलता की दिशा ज्ञान, शान्ति व शक्ति की ओर प्रवाहित करना ही क्रियायोग का अभ्यास है जिससे मनुष्य प्रतिदिन पहले से अधिक शान्ति, ज्ञान व शक्ति की अनुभूति करता है और यह क्रम निरन्तर घटित होता है । इसी को स्वर्गारोहण कहा गया है ।




**क्रियायोग का विश्वव्यापी प्रसार एक ऐसे अखण्डित विश्व का सूत्रपात करेगा**
**जिसके शासक स्वयं परमचैतन्य परमात्मा होंगे ।**

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि स्वरूप में होने वाले अनगिनत परिवर्तन को शिव शक्ति कहा गया है । क्रियायोग अभ्यास के द्वारा अन्तःकरण में विष आत्मसात कर लेने पर मानव के स्वरूप में अनन्त सौन्दर्य प्रकट होता है । सागर मंथन में प्राप्त अमृत स्वरूप के भ्रूमध्य, कण्ट, आज्ञाचक्र और कूटस्थ में टपकने लगता है और अन्तःकरण में इन्हीं स्थानों को नासिक, उज्जैन, प्रयाग और हरिद्वार कहा गया है ।

अन्तःकरण में व्याप्त कुम्भ के बारे में स्पष्ट करते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि क्रियायोग ध्यान के द्वारा सिर व रीढ के अंदर प्राणशक्ति को उर्ध्व दिशा में प्रवाहित करने पर अंदर में गंगा प्रकट होती है । सिर व रीढ के अंदर प्राणशक्ति को अधोमुखी प्रवाहित करने पर अंदर में यमुना प्रकट होती हैं । गंगा और यमुना की धारा सिर व रीढ के सात स्थलों पर मिलती है जिसे प्रयाग कहा गया है तथा आज्ञाचक्र के अंदर विद्यमान कूटस्थ शक्ति को प्रयागराज कहा गया है । क्रियायोग शिविर में प्रशिक्षण के दौरान क्रियायोग ध्यान का विधिवत अभ्यास कराया गया ।

मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6 से 7 बजे तक, श्री श्री महावतार बाबा वटवृक्ष परिसर में प्रातः 6:30 बजे से 8 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:30 बजे से 9:30 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 5 बजे तक और रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अॅग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता